Notes

1- विद्यालयी शिक्षा के लिए ज्ञान के वर्गों का चयन करते समय सार्वजनिक हित की भावना को ध्यान में रखना चाहिए हिन्दी से प्रयुक्त कविताओं कहानियों को प्रयुक्त करना चाहिए जो की व्यक्ति पहले सार्वजनिक हित पर विचार करता है और सामाजिक व्यक्ति होता है।

2. विद्यालयी शिक्षा का प्रमुख पक्ष सामाजिक सुधार होना चाहिए, पाठ्यक्रम में इस प्रकार के तथ्यों का समावेश किया जाय की छात्रों में स्वस्थ परम्पराओं का विकास के लिए सार्थक हों इसके साथ-साथ समाजिक स्वरूपों को आदर्श बनाने की प्रक्रिया विचारणीय एवं समावेश होनी चाहिए

3. विद्यालय शिक्षा में वर्गों या विषयों का समावेश किया जाना चाहिए जिसमे छात्र का सामाजिक गुण प्रेम. सहयोग, एवं समर्पण की भावना का विकास हो सके।

विद्यालय शिक्षा के राजनैतिक आधार ⇒ विद्यालयी शिक्षा मे राजनैतिक आधार सम्बन्धी तथ्यों को सम्मिलित करके की केवल तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है।

1- विद्यालयी शिक्षा में प्रशासनिक नियमों के बारे मे अनिवार्य रूपों से ज्ञान प्रदान किया जाये जिससे छात्र का विविध प्रकार से प्रशासनिक नियमो का पालन की आदतें का विकास होता होता है।

Notes

जैसे सामाजिक सम्पत्ति की सुरक्षा करना, सार्वजनिक कार्यों में सहयोग देना, शासकीय नियमों एवं नीतियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।

1 छात्रों के स्वानुशासन की भावना विकसित करने के लिए स्थाई प्रशासन का ज्ञान भी छात्रों को प्रदान करना चाहिए स्थाई प्रशासन के नियमों एवं परम्पराओं का पालन करने के लिए छात्रों के नियमों का पालन करना

3- विद्यालयी छात्रों में छात्रों के राजनीतिक अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान प्रदान करना

4 विद्यालयी शिक्षा में छात्रों को राजनीतिक धर्म एवं राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यकता के बारे में बताना चाहिए इससे छात्रों के राजनीतिक कार्यों के मूल्यांकन की क्षमता उत्पन्न हो सके

3. विद्यालयी शिक्षा के सांस्कृतिक आधार:

विद्यालयी शिक्षा का स्वरूप सामाजिक सांस्कृतिक आधार पर ही निश्चित होता है। जब विद्यालयी शिक्षा अपनी संस्कृति एवं सभ्यता से पृथक हो जाता है। जब विद्यालय विद्यार्थी एवं शिक्षक तीनों का स्वरूप विकृत हो जाता है।

Notes

1- विद्यालयी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों को आधार मानकर विषय वस्तु का समावेश होना चाहिए।
जैसे दूसरो को सम्मान प्रदान करना, दूसरो की सहायता प्रदान करनी, दूसरो के हित के बारे में विचार करना दूसरो को स्वयं को समर्पण करना आदि। इन सभी रूपों का समावेश भारतीय संस्कृति को संरक्षण प्राप्त होता है

2. विद्यालयी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के साथ-साथ सांस्कृतिक विश्वासों का भी समावेश किया जाना चाहिए। सांस्कृतिक विश्वास मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के आवश्यक है।
जैसे अच्छे कार्य का परिणाम अच्छा होता हैं नदियाँ हमारी माता के समान है, वृक्षों को नहीं काटना चाहिए, वृक्षा रोपण करना चाहिए।

3. विद्यालय शिक्षा के उन सांस्कृतिक परम्पराओं को सम्मानित करना चाहिए जो स्वस्थ एवं समाजोपयोगी है
जैसे- दूसरों के स्त्री को माता के समान समझनी, दूसरो के धन को मिट्टी के समान समझनी, मन, वचन, कर्म से किसी को न पहुंचाना,

Scanned with CamScanner

Notes

विद्यालयी शिक्षा के वैज्ञानिक आधार :- विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में वैज्ञानिकता का समावेश अनिवार्य ~~रूप से~~ रूप से होना चाहिए। क्योंकि वैज्ञानिकता भौतिक विकास का प्राकृतिक संसाधनों के सार्वजनिक हित में प्रयोग के आवश्यक

1- प्राथमिक स्तर से ही छात्रों को परिवेशी घटनाओं के सन्दर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकास को का प्रयास करना चाहिए
जैसे तालाब में धुँआ उठता है बच्चों के मन में यह भावना विकसित करनी चाहिए। उसका उसका कारण क्या है, इस प्रकार प्रत्येक घटना की व्याख्या को शिक्षक को वैज्ञानिक सन्दर्भ में करनी चाहिए

2. शिक्षा व्यवस्था में छात्रों को अधिक से अधिक अवसर करके सीखने के देने चाहिए।
छात्रों को अलग-अलग प्रयोग किया करने के लिए प्रेरित किया जाय।

3- पाठ्यक्रम में छोटी-छोटी समस्या छात्रों को स्तरानुकूल प्रस्तुत करनी चाहिए। जिसमें छात्रों में खोज एवं तर्क की प्रवृत्ति जागृत होगी

4. छात्रों को विद्यालयी शिक्षा में विविध प्रकार की कल्पनाएँ करके तथा सृजनात्मकता कार्य के अवसर प्रदान करने चाहिए

5 विद्यालयी शिक्षा में सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ प्रयोगात्मक ज्ञान की व्यवस्था करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

Notes

1- विधालयी शिक्षा मे सांस्कृतिक मूल्यों को आधार मानकर विषय वस्तु का समावेश होना चाहिए।
जैसे दूसरो को सम्मान प्रदान करना, दूसरो की सहायता प्रदान करना, दूसरों के हित के बारे मे विचार करना दूसरो को स्वयं को समर्पित करना आदि। इन सभी रूपों का समावेश भारतीय संस्कृति को संरक्षण प्राप्त होता है

2. विधालयी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के साथ-साथ सांस्कृतिक विश्वासो का भी समावेश किया जाना चाहिए। सांस्कृतिक विश्वास मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के आवश्यक है।
जैसे अच्छे कार्य का परिणाम अच्छा होता है, नदियाँ हमारी माता के समान है, वृक्षो को नही काटना चाहिए, वृक्षा रोपण करना चाहिए।

3. विधालय शिक्षा के उन सांस्कृतिक परम्पराओ को सम्मालित करना चाहिए जो स्वस्थ एवं समाजोपयोगी है
जैसे- दूसरों के स्त्री को माता के समान समझना, दूसरो के धन को मिट्टी के समान समझना, मन, वचन, कर्म से कष्ट न पहुचाना,

Scanned with CamScanner